चरित्र का बदलाव

अय्यूब और अन्य जो आदर्श बने परमेश्वर के बल द्वारा

जो बच्चों को पढ़ाते हैं पढ़ें अध्ययन सी 1 ब

प्रार्थनाः "पिता, कृपया इस अध्ययन द्वारा मेरी और अन्य जो स्वयं स्वेच्छापूर्वक चरवाहे हैं उनको प्रभु यीशु में बढ़ायें।"

1. तैयारी करें प्रभु यीशु मसीह के समान चरित्र बनाने में

पृष्टभूमि

अय्यूब ने बहुत से क्लेश सहन किये, परमेश्वर से इसके बारे में तर्क किये, और अपने विश्वास के द्वारा परमेश्वर में दृढ़ बना रहा।

अय्यूब एक धार्मिक व्यक्ति था, लेकिन फिर भी सीखने की इच्छा रखता था, और उसने सर्वशक्तिमान को रहस्यमयी ढंग से अपने जीवन में कार्य किया।

परमेश्वर के बल द्वारा, जो भी क्लेश व दुःख अय्यूब के जीवन में आये, विश्वास व धैर्य से उसने सहन किया।

अय्यूब के मित्रों ने उस पर दोषारोपण किया यह दर्शाता है कि केवल कोसने या बुरा भला कहने से बदलाव नहीं आयेगा। कुछ चरवाहे अय्यूब के मित्रों के सामान लोगों पर दबाव डालते हैं।

उसी प्रकार भले बने रहें जिस प्रकार अय्यूब के मूर्ख मित्रों ने किया था। उन्होंने अय्यूब को कोसा और दोषी महसूस करने के लिये उकसाया। इसके विपरीत, मसीही लोगों का कर्त्तव्य है कि लोगों की मदद करें कि वे परमेश्वर को जानें और पवित्रात्मा की सामर्थ से एक दूसरे की सेवा करें।

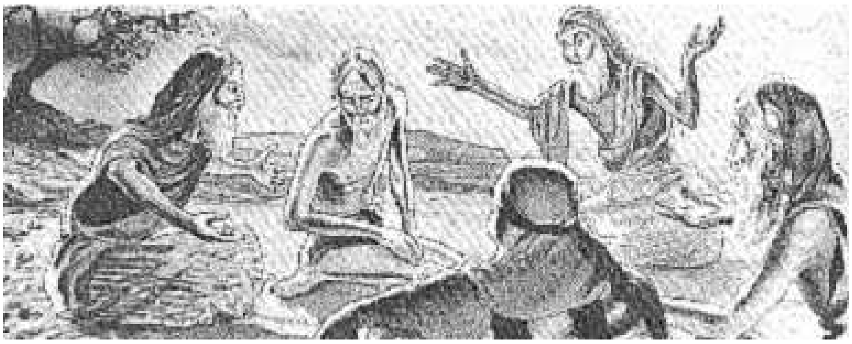

अय्यूब की पुस्तक के प्रथम अध्याय में इन सच्चाईयों को ढूंढें

प्रकाशितवाक्य 12:10 में क्यों शैतान को "हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला" कहा गया है।

अय्यूब के विश्वास और चरित्र की परीक्षा करने के लिये परमेश्वर ने शैतान को क्या करने दिया।

अध्याय 2 में देखें:

अधिक से अधिक क्लेश व दुःख, परमेश्वर ने शैतान को आज्ञा दी कि अय्यूब को दे।

अय्यूब के उन तीनों मित्रों के नाम जो उसको तसल्ली देने आये थे।

अध्याय 3 में देखें: अय्यूब ने क्या इच्छा की जो उसको जन्म के समय हो जाता।

अध्याय 4 व 5 में देखें एलीपाज ने अय्यूब के दुःख का क्या कारण सोचा।

(उत्तर: देखें 4:7-8 उसी प्रकार जिस प्रकार कई लोग दूसरो पर दोष लगाते और न्याय करते हैं। एलीपाज ने गलती से यह विचार किया कि अय्यूब दु:ख-तकलीफ सहन कर रहा है क्योंकि अय्यूब के अन्दर कुछ ऐसी बुरी चीज़ है, जिसको परमेश्वर, सज़ा दे रहा है।)

अध्याय 6-11 में देखें:

6:21-30 में, एलीपाज की सांत्त्वना को अय्यूब ने क्या सोचा

अध्याय 8 में बिल्दाद ने अय्यूब ने अपने जीवन के विषय में क्या सोचा।

अध्याय 9-10 में अय्यूब ने अपने जीवन के विषय में क्या सोचा।

अध्याय 10:20-22 में अय्यूब क्या चाहता था कि उसके मित्र करें।

अध्याय 11 में सोपर ने क्या सोचा कि अय्यूब के दु:ख-तकलीफ का कारण है। (देखें आयते 13-15)

अय्यूब 12:1-3 में अय्यूब ने अपने मित्रों की सलाह के बारे में क्या सोचा।

अध्याय 12-31 में चारों आदमियों ने दूसरी बार क्या तर्क दिया: देखें:

12:1-3 में अय्यूब ने अपने तीनों मित्रों की सलाह के विषय में सोचा।

19:23-27 में अय्यूब की अन्तिम आशा क्या थी?

अध्याय 38-41 में परमेश्वर ने बवण्डर में से कहा, अय्यूब के मुश्किल प्रश्नों के उत्तर देखें:

38:1-3 में परमेश्वर ने उन तीनों सलाहकारों के विषय में क्या सोचा।

38:4-5 में परमेश्वर ने अय्यूब से क्या पूछा जिससे अय्यूब अपने आप को निर्दोष जाने।

अध्याये 32-37 में एलीपाज आता है। 32:3-10 में देखें वह उन तीनों से क्यों गुस्सा था।

अध्याय 42 अन्तिम परिणाम का प्रकाशन। देखें:

42:1-6 में अय्यूब ने अपने बारे में और अपने व्यवहार के बारे में किस प्रकार का विचार किया।

42:7-8 में उन तीनों मनुष्यों से परमेश्वर क्यों नाराज हुआ और उन्हें क्या करने को कहा।

42:10-17 में अन्तिम परिणाम क्या थे।

1 पतरस 1:3-9 में देखें यीशु मसीह के दु:ख सहने के बहुत से परिणाम।

2. सहकर्मियों के साथ सप्ताह के दौरान क्रिया-कलापों की योजना बनायें।

लोगों को प्रोत्साहित करें कि अपने पापों को परमेश्वर के सम्मुख मान लें और परमेश्वर की परिवर्तन करने की शक्ति के बारे में पूछें।

3. सहकर्मियों के साथ मिलकर आराधना को सुनियोजित ढंग से चलाने के लिये योजना बनायें

बच्चे अपना तैयार किया नाटक प्रस्तुत करें और जो भी प्रश्न, दाऊद ने शाऊल को क्षमा किया, इसके बारे में तैयार किये हैं, पूछें।

पुन: गणना कीजिये या नाटक करे उन सभी आवश्यक कार्यों का जो अय्यूब (भाग 1) में दिये गये हैं। आपने क्या पाया उसके विषय प्रश्न पूछें।

छोटे-छोटे समूह बनायें कि इन कार्यों पर चर्चा करें, प्रार्थना करें, दूसरी क्रिया-कलापों द्वारा योजना बनाकर एक दूसरे की सहायता कीजिये।

याद करें गलतियों 5:22-23

प्रभु-भोज का आरम्भ करने से पहले, बतायें कि अय्यूब ने किस प्रकार अपने परामर्श देने वालों के लिए लहू (खून) का बलिदान किया, अय्यूब 42:7-8 । समझाएँ कि प्रभु यीशु का लहू हमारे सारे लज्जाजनक बर्ताव को ढक लेता है।

बाईबल के अनुसार 'शारीरिक' जीवन।

- जैसे प्रभु के वचन में दिया गया है हम परमेश्वर जैसा चरित्र एक समूह के प्रयत्न से बना सकते हैं हम इसे अकेले नहीं कर सकते।
- पवित्रात्मा हमें आत्मिक दान (फल) देता है जिसके द्वारा हम सेवकाई कर सकते हैं तथा एक दूसरे को प्रेम के द्वारा आगे बढ़ा सकते हैं। (1 कुरन्थियों अध्याय 12 और 13)
- जब हम परमेश्वर की देह के विश्वासियों के साथ मेल-जोल करते हैं तो अपने चरित्र को बनाते हैं और दूसरों की सेवा करते हैं। उदाहरणत: शराब पीने वाले अपनी गन्दी आदत को आसानी से छोड़ सकते हैं जब दूसरों को इस आदत को छोड़ने में सहायता करते हैं।

समझायें कि कुछ लोग बुरे और अच्छे सामान्य जानवरों का आभास कराते हैं।

कुछ लोग बर्ताव करते हैं:	**जब वे पवित्रात्मा को शोकित करते हैं**	**जब वे पवित्रात्मा से भर जाते है**
शक्तिमान बैल, पौलुस के सामान 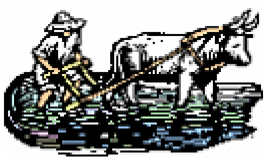	पौलुस ने स्तिफनुस के पत्थरवाह में भाग लिया जब तक वह मर नहीं गया, और उसने विश्वासियों को सताया	बाद में पौलुस ने झुण्डों को इकट्ठा करने में, चरवाहों को प्रशिक्षण देने में और परमेश्वर के वचन को दूसरे धर्म के लोगो को सुनाया
कुत्ते के बच्चें, भौंकते हुये पतरस के समान: 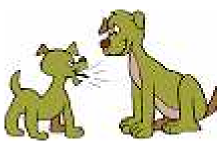	पतरस अकसर बात करने में जल्दबाजी करता था; उसने प्रभु यीशु की मृत्यु की योजना का विरोध किया और उसका इन्कार किया।	बाद में पतरस ने घोषणा की यीशु मसीह के विषय कि वही सर्वशक्तिमान है और अन्य लोगों को विश्वास और पश्चाताप में वापिस लाता है।
दूरदर्शी उकाब, दाऊद के समान: 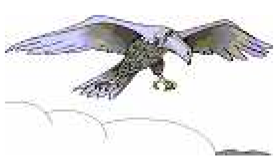	दाऊद ने अपने सिपाहियों की गणना की जिससे एक महामारी आई, और उसने अरिय्याह की पन्ति के पत्नी व्यभिचार किया।	दाऊद ने बहुत सुन्दर भजन लिखे नया मंदिर बनाने की योजनायें बनाई और अनन्तकाल के राज्य का विश्वास किया।
धैर्यपूर्वक कार्य करना घोड़े के 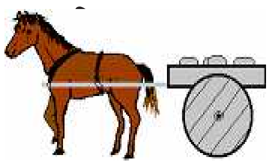	अय्यूब ने परमेश्वर सेइतने अधिक दु:ख क्लेशों के लिए प्रश्न पूछे, और बहुत अधि क तर्क किये।	इतने बड़े दुखों व क्लेशों में भी अय्यूब एक दृढ़ परमेश्वर का भय रखने वाला बना रहा, और अपने सारे प्रश्नों के लिये जो उसने परमेश्वर से पूछे थे, पश्चात्ताप किया।